Roll No. .....

E–384

M. A. (Second Semester) (Main/ATKT)

EXAMINATION, May-June, 2021

HINDI

Paper Eighth

[आधुनिक गद्य साहित्य (उपन्यास, निबन्ध एवं कहानी)]

Time : Three Hours] [*Maximum Marks : 80*

नोट : निर्देशानुसार सभी खण्डों के उत्तर दीजिए।

खण्ड–अ प्रत्येक 1

(वस्तुनिष्ठ / बहुविकल्पीय प्रश्न)

नोट : सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

सही उत्तर का चयन कीजिए :

1. 'गोदान' की कथावस्तु केन्द्रित है :

(अ) नारी शोषण पर

(ब) बाल मनोविज्ञान पर

(स) कृषक जीवन के संघर्ष पर

(द) महानगरीय जीवन पर

2. 'बाणभट्ट की आत्मकथा' के रचनाकार हैं :

(अ) प्रेमचंद

(ब) जैनेन्द्र कुमार

(स) इलाचन्द्र जोशी

(द) हजारी प्रसाद द्विवेदी

3. 'कविता क्या है' रचना है :

(अ) कहानी विधा की

(ब) निबन्ध विधा की

(स) उपन्यास विधा की

(द) कविता विधा की

4. पाठ्यक्रम में सम्मिलित रामवृक्ष बेनीपुरी रचित निबन्ध है :

(अ) चढ़ती उमर

(ब) कविता क्या है

(स) गेहूँ बनाम गुलाब

(द) वैष्णव की फिसलन

5. "तेरी कुड़माई हो गई है ?" कथन है :

(अ) 'ईदगाह' कहानी का

(ब) 'गोदान' उपन्यास का

(स) 'बादलों के घेरे' कहानी का

(द) 'उसने कहा था' कहानी का

6. 'फुलकारी' की चर्चा है :

(अ) 'पुरस्कार' कहानी में

(ब) 'चीफ की दावत' कहानी में

(स) 'उसने कहा था' कहानी में

(द) 'ईदगाह' कहानी में

7. 'तुम चन्दन हम पानी' निबन्ध के रचयिता हैं :

(अ) विद्यानिवास मिश्र

(ब) बालकृष्ण भट्ट

(स) प्रतापनारायण मिश्र

(द) रामचन्द्र शुक्ल

8. 'गोदान' उपन्यास में प्रमुख पुरुष पात्र है :

(अ) गोबर

(ब) मेहता

(स) खन्ना

(द) होरी

9. 'निपुणिका' पात्र है :

(अ) 'ईदगाह' कहानी की

(ब) 'गोदान' उपन्यास की

(स) 'पुरस्कार' कहानी की

(द) 'बाणभट्ट की आत्मकथा' उपन्यास की

10. 'पुरस्कार' कहानी के रचनाकार हैं :

(अ) जयशंकर प्रसाद

(ब) प्रेमचंद

(स) भीष्म साहनी

(द) कृष्णा सोबती

11. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के पाठ्यक्रम में सम्मिलित निबन्ध का क्या नाम है ?

(अ) वैष्णव की फिसलन

(ब) कविता क्या है

(स) गेहूँ बनाम गुलाब

(द) चढ़ती उमर

12. 'दादी' पात्र हैं :

(अ) 'ईदगाह' कहानी की

(ब) 'बादलों के घेरे' कहानी की

(स) 'पुरस्कार' कहानी की

(द) 'उसने कहा था' कहानी की

13. 'चढ़ती उमर' के निबन्धकार हैं :

(अ) प्रेमचन्द

(ब) हरिशंकर परसाई

(स) हजारी प्रसाद द्विवेदी

(द) बालकृष्ण भट्ट

14. 'लहनासिंह' प्रमुख पात्र है :

(अ) 'गोदान' का

(ब) 'उसने कहा था' का

(स) 'बाणभट्ट की आत्मकथा' का

(द) 'ईदगाह' का

15. अस्वस्थ मनुष्य की वेदना को रेखांकित करने वाली कहानी है :

(अ) पुरस्कार

(ब) चीफ की दावत

(स) ईदगाह

(द) बादलों के घेरे

16. भीष्म साहनी कहानीकार हैं :

(अ) परम्परावादी

(ब) मनोविश्लेषणकारी

(स) विद्रोही

(द) प्रगतिशील

17. ललित निबन्ध लिखने के लिए ख्यात हुए :

(अ) बालकृष्ण भट्ट

(ब) रामचन्द्र शुक्ल

(स) विद्यानिवास मिश्र

(द) हरिशंकर परसाई

18. पाठ्यक्रम में सम्मिलित व्यंग्य निबन्ध है :

(अ) कविता क्या है

(ब) वैष्णव की फिसलन

(स) तुम चन्दन हम पानी

(द) काव्यकला

19. 'गोदान' उपन्यास में होरी की पुत्री का नाम है :

(अ) झुनिया

(ब) मालती

(स) सोना

(द) गोविन्दी

20. ऐतिहासिक उपन्यास लिखे हैं :

(अ) प्रेमचन्द ने

(ब) हजारी प्रसाद द्विवेदी ने

(स) जैनेन्द्र कुमार ने

(द) इलाचन्द्र जोशी ने

खण्ड—ब प्रत्येक 2

(अति लघु उत्तरीय प्रश्न)

नोट : सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. 'गोदान' किस प्रकार का उपन्यास है ?
2. 'बाणभट्ट की आत्मकथा' का भट्ट कौन है ?
3. 'वैष्णव की फिसलन' निबन्ध का कथ्य क्या है ?
4. 'गेहूँ बनाम गुलाब' किस प्रकार का निबन्ध है ?
5. 'पुरस्कार' कहानी की नायिका कौन है ?
6. 'उसने कहा था' कहानी की सूबेदारनी कौन है ?
7. 'चीफ की दावत' कहानी के **दो** प्रमुख पात्र कौन-कौन हैं ?
8. कृष्णा सोबती की कौन-सी कहानी पाठ्यक्रम में है ?

खण्ड—स प्रत्येक 3

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

नोट : सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. हिन्दी निबन्ध के उद्‌भव और विकास को संक्षेप में बताइए।
2. 'बाणभट्ट की आत्मकथा' के कथानक को संक्षेप में लिखिए।
3. 'धनिया' की चारित्रिक विशेषताएँ लिखिए।

4. 'गेहूँ बनाम गुलाब' निबन्ध का सार लिखिए।
5. 'कविता क्या है' निबन्ध का मूल कथ्य लिखिए।
6. 'उसने कहा था' कहानी की विशेषताएँ बताइए।
7. हामिद की चारित्रिक विशेषताएँ लिखिए।
8. हिन्दी उपन्यास की विकासयात्रा पर संक्षेप में प्रकाश डालिए।

खण्ड—द प्रत्येक 5

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न)

नोट : सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. 'गोदान' उपन्यास की कथावस्तु की विवेचना कीजिए।

अथवा

हिन्दी कहानी के उद्‌भव और विकास को सोदाहरण लिखिए।

2. 'ईदगाह' कहानी की तात्त्विक समीक्षा कीजिए।

अथवा

'बादलों के घेरे' कहानी की कथावस्तु की तत्त्वगत विवेचना कीजिए।

3. ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए :

जीवन का सुख दूसरों को सुखी करने में है, उनको लूटने में नहीं। बुरा न मानना, अब तक तुम्हारे जीवन का अर्थ था आत्मसेवा, भोग और विलास। दैव ने तुम्हें उस साधन से वंचित करके तुम्हारे लिए ज्यादा ऊँचे

और पवित्र जीवन का रास्ता खोल दिया है। यह सिद्धि प्राप्त करने में अगर कुछ कष्ट भी हो, तो उसका स्वागत करो। तुम इसे विपत्ति समझते ही क्यों हो ? क्यों नहीं समझते, तुम्हें अन्याय से लड़ने का यह अवसर मिला है। मेरे विचार में तो पीड़क होने से पीड़ित होना कहीं श्रेष्ठ है। धन खोकर अगर हम अपनी आत्मा को पा सके, तो यह कोई महँगा सौदा नहीं है।

अथवा

बेटी, तू धन्य है ! मैंने तुझे अनेक अभिशाप दिए हैं। आज मैं अपने सभी अभिशापों को वरदान समझ रहा हूँ। मैं आज स्पष्ट देख रहा हूँ कि जितने बंधे-बँधाए नियम और आचार हैं, उनमें धर्म अँटता नहीं। वह नियमों से बड़ा है, आचारों से बड़ा है। मैं जिनको धर्म समझता रहा, वे सब समय और सभी अवस्था में धर्म ही नहीं थे, जिन्हें अधर्म समझता रहा वे सब समय और सभी अवस्था में अधर्म ही नहीं कहे जा सकते। योगी ने मुझे बताया था कि जिस दिन तू धर्म को अधर्म और अधर्म को धर्म समझ लेगा, उसी दिन त्रिपुरसुन्दरी का साक्षात्कार पा सकेगा। आश्चर्य है !

4. **ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए :**

मैंने तेरे को आते ही पहचान लिया। एक काम कहती हूँ, मेरे तो भाग फूट गये। सरकार ने बहादुर का खिताब दिया है, लायलपुर में जमीन दी है, आज नमक-हलाली का मौका आया है। पर सरकार ने हम तीमियों

की घघरिया पलटन क्यों न बना दी, जो मैं भी सूबेदार जी के साथ चली जाती ? एक बेटा है। फौज में भरती हुए एक ही वर्ष हुआ, उसके पीछे चार और हुए, पर एक भी नहीं जिया।' सूबेदारनी रोने लगी। 'अब दोनों जाते हैं ! मेरे भाग। तुम्हें याद है, टाँगेवाले का घोड़ा दही वाले की दुकान के पास बिगड़ गया था। तुमने उस दिन मेरे प्राण बचाये थे। ऐसे ही इन दोनों को बचाना, यह मेरी भिक्षा है। तुम्हारे आगे आँचल पसारती हूँ।

अथवा

माँ के चेहरे का रंग बदलने लगा, धीरे-धीरे उसका झुर्रियों भरा मुँह खिलने लगा, आँखों में हल्की-हल्की चमक आने लगी।

"तो तेरी तरक्की होगी, बेटा ?"

"तरक्की यूँ ही हो जायेगी ? साहब को खुश रखूँगा तो कुछ करेगा, वर्ना उसकी खिदमत करने वाले और थोड़े हैं ?

"तो मैं बना दूँगी, बेटा, जैसे बन पड़ेगा बना दूँगी।"

और माँ दिल-ही-दिल में फिर बेटे के उज्ज्वल भविष्य की कामनाएँ करने लगीं और मिस्टर शामनाथ "अब सो जाओ, माँ" कहते हुए तनिक लड़खड़ाते हुए अपने कमरे की ओर घूम गये।